# संपादकीय

राष्ट्रीय ज़लविज्ञान संस्थान, रुड़की के वैज्ञानिको एवम् सहकर्मियों के नवीन हिन्दी रचनाओं के संकलन की वार्षिक पत्रिका 'प्रवाहिनी' का यह 6 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है । राजभाषा हिन्दी के स्थापना का स्वर्णजयन्ती वर्ष होने के नाते इसके स्वयं के अतीत पर विहंगम दृष्टिपात करना समीचीन होगा ।

हमारी आजादी के विगत 52 वर्ष बीत चुके हैं । हमारे देश ने अभी हाल में १५ अगस्त '९९ को ५३वां स्वतंत्रता दिवस, जो इस बीसवीं सदी का अंतिम राष्ट्रीय पर्व है, बडे धूमधाम से मनाया । भारत के लिये यह वर्ष अति उत्कृष्ट रहा । नाभिकीय, नभ तथा सूचना क्षेत्रो में भारत ने बहुत ख्याति अर्जित की । यह अनेक सफ़लताओ का वर्ष रहा । भारत ने अनेक क्षेत्रों में अपनी पहचान कायम की तथा अनेक क्षेत्रों में नवीन कार्यक्रमों का सूत्रपात किया । परन्तु , उल्लेखनीय बात यह है कि इन पचास वर्षों के बीतने के पश्चात् भी हमारी राजभाषा 'हिन्दी ' को वह गौरव प्राप्त नहीं हो सका है जिसकी वह अधिकारिणी है । इस वर्ष जबकि हम राजभाषा की स्वर्णजयन्ती मना रहे हैं, यह उद्घृत करना उचित होगा कि भारतीय संविधान के 26 जनवरी 1950 को संविधान सभा की स्वीकृति के उपरान्त दिनांक 14 सितम्बर, 1949 को भारत संघ की राजभाषा के रूप में 'हिन्दी' को अंगीकार किया गया था । अत: यह आवश्यक है कि हिन्दी की स्थापना की स्वर्णजयन्ती मनाते समय हम आत्मविवेचन तथा आत्मावलोकन करें ।

किसी भी देश के लिये, जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है, वही उसकी राजभाषा का है । राज्य अथवा प्रशासन की भाषा को राजभाषा कहते हैं । राजभाषा नीति को लागू करने के लिए सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित हुआ और इसमें सन् 1967 में संशोधित किया गया । सरकार द्वारा एक संकल्प भी लिया गया जिसके तहत इसके प्रचार प्रसार, विकास किया जाना वांक्षित था । सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढाने के निमित्त सन् 1976 में राजभाषा नियम बनाये गये । देश के सरकारी एवम् अर्धसरकारी कार्यालयो, स्वशासित केन्द्र एवम् राज्य के उपक्रमो द्वारा हिन्दी के प्रयोग की वृद्धि एवम् सुचारु कार्यान्वयन के लिये हिन्दी समिति, हिन्दी सलाहकार समिति, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन तथा इसके माध्यम से यह कार्य सम्पन्न किया जाने का एक मार्ग प्रशस्त हुआ । राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सामान्य आदेश, परिपत्र, संकल्प, अधिसूचनाएं आदि द्विभाषी रूप में जारी किए जाने का प्राविधान है ।

यद्यपि राजभाषा के रुप में हिन्दी के विकास, प्रचार - प्रसार एवम् प्रयोग की दिशा में हमारे कार्यालय ने सराहनीय प्रगति की है, जिसका परिणाम है कि हम संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका जलविज्ञान समाचार एवम् हिन्दी की वर्तमान वार्षिक पत्रिका 'प्रवाहिनी' का लगातार प्रकाशन कर रहे हैं । विगत वर्ष प्रकाशित जलविज्ञान पर एक बहुभाषी शब्दकोश की रचना भी इसी की एक कडी मात्र है । परन्तु अभी तक हम तकनीकी प्रयोगों मे निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके हैं । आधुनिक तकनीकी विकास, मुद्रण एवम् प्रकाशन के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हो रहा है । इस दिशा

में संस्थान द्वारा किये जा रहे प्रयासो से भविष्य में कुछ और रचनाओं, पुस्तकों, मौलिक ग्रन्थों के मुद्रण तथा प्रकाशनों की बहुत अधिक संभावनाएं व्यक्त की जा रहीं हैं। यह अति प्रसन्न्ता की बात है कि राजभाषा की स्थापना की स्वर्णजयन्ती वर्ष के इस पावन अवसर पर वैज्ञानिक एवम् साहित्यिक रुचि की अनेकों प्रतिभाओं ने अपने लेख एवम् कविताओं का अमुल्य योगदान देकर इसे गौर्वान्वित किया है। सम्पादक मंडल इन सबका सहृदय आभार व्यक्त करता है एवं आशा करता है कि भविष्य में ऐसे कर्तब्यनिष्ठ लोगो की तादात और सृजन क्षमता में और वृद्धी होगी। यह प्रवाहिनी उस सृजन सरिता का श्रोत बने एसी हमारी कामना है।

**संपादक मंडल**

**ऊं असतो मां सद्गमय।**
**तमसो मां ज्योतिर्गमय।**
**मृत्योर्मा अमृतं गमय॥**

अर्थ–हे! प्रभू मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलें।

**॥ सरस्वत्यै नम : ॥**
**सरस्वती नम्स्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी।**
**विद्यारम्भम् करिष्यामि, सिद्धि भवतु में सदा॥**

अर्थ : हे देवी सरस्वती ! कार्य की सिद्धि के लिये विद्या आरम्भ करने से पूर्व हम आपको सादर प्रणाम करते हैं। हमारी सभी सद्-इच्छाओं को पूर्ण करने का वरदान दें।

---

यदि भारतीय लोक कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है।

◆ श्री सी० राजगोपालाचारी

हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फ़ूलों को पिरो कर भारतमाता के लिये सुन्दर हार का सृजन करेगा।

◆ डा० जाकिर हुसैन

---